प्रातः क्लास ओम 20-7-66 (20-7-66)

रिकार्ड:-अत्रेम×अमितम इस पाप की दुनियां से .... ओम शान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चो ने गीत सुना। किस ने सुना? आत्मायो ने। आत्मा को परमात्मा नही कहा जाता। एक चीज़ को दो अक्षर नही दिया जा सकता। मनुष्य को भगवान नही कह सकते। अच्छा अभी तुम हो ब्रह्मण। तुमको अभी देवता बनना है। ब्रह्मण को देवता नही कहा जा सकता। ब्रह्मा को भी देवता नही कहा जा सकता। भल कहते है ब्रह्मा देवता नमः विष्णु देवता नमः... परन्तु ब्रह्मा और विष्णु मे तो बहुत फर्क है। विष्णु को देवता कहा जाता। ब्रह्मा को देवता नही कह सकते। क्योकि वो है ब्रह्मणो का बाप। ब्रह्मणो को देवतानही कहा जाता। शंकर को ना ब्रह्मा को देवता कहा जा सकता। वो तो देवता बनता है। दैवी धर्मवाला तो विष्णु बनता है ना कि शकर। अब यह बाते कोईमनुष्य, मनुष्य को नहीसमझा सकते। भगवान ही समझाते है। मनुष्य तो अन्धर्श्वा मे जो आता सो बोल देते। अब तुम बच्चे समझते हो रूहानी बाप हम बच्चो को पढ़ा रहे है। अपनको आत्मा समझना है। हम आत्मा यह शरीर लेते है। हम आत्मा ने 84जन्म लिए है। जैसा2 कर्म करते है वैसा शरीर मिलता है। शरीर से आत्मा अलग हो जाती है तो फिर शरीर से प्यार नही रहता। आत्मा से प्यार रहता है। आत्मा से भी प्यार तब है जब आत्मा शरीर मे है। पित्रो को मनुष्य बुलाते है। शरीर तो उनका खतम हो गया। फिर उनकीआत्मा को याद करते है। इसलिए ब्रह्मण बुलाते है। कहते है फलाड़े की आत्मा आयो। यह भोजन आकर खायो। गोया आत्मा मे मोह रहता है। परन्तु पहले शरीर मे मोह था तो वो शरीर याद आता था। ऐसे नहीसमझते कि हम आत्मा को बुलाते है। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा मे अच्छे वा बुरे सस्कार रहते है। पहले2 है देह अभिमान। फिर उनके बाद और विकार आते है। सब को मिला कर कहा जाता है विकारी। जिसमे यह नही है उनको कहा जाता है निरविकारी? यह तो समझते हो बेरोबर भारत मे जबयह देवी देवताए शेर थे तो उन मे दैवी गुण थे। इन लक्ष्मी नारायण आदि का है ही देवी देवता धर्म। जैसे प्रश्चयन धर्म। यह भी कहा जाता है राज रानी प्रजा सब देवी देवता धर्म के है। यह बहुत उच्च सुख के देने वाला है। बच्चो ने भी गीत सुना। यह आत्मा ने कहा कि बाबा ऐसी जगह ले चलो जहां मुझे चैन शान्ति हो। वो तो है सुखधाम औरशान्ति धाम। यहां बड़ी बैचैनी है। सतयुग मे भी बैचैनी होती है नही। आत्मा समझती है बाबा बिगर कोई चैन की दुनिया मेनही ले जा सकता। बाप कहते है मुक्ति और जीवन मुक्ति यह दो सौगात मै कल्प2 लाता हू। परन्तु तुम भूल जाते हो। डामा मे भूलना ही है। सब भूल जाए तब तो मै आऊं। तो अब तुम ब्रह्मण बने हो तुमको निश्चय है हमने 84जन्म बरोबर लिए है। जो पूरा ज्ञान नही उठावेगे वो नईदुनियां मे नही आवेगे त्रेता वा त्रेता को अन्त मे आ जाएगे। सारा मदार है पुरुषार्थ पर। सतयुग मे सुख था तो सभीशान्तिधाम मे थे। इन लक्ष्मी नारायण का राज्य था। अच्छा आगे जन्म मे यह कौन थे। किस को पता नही है। आगे जन्म मे यह बैचैन थे। ब्रह्मण थे। ब्रह्मण से पहले शूद्र थे। वर्णो पर तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। देवता वर्ण क्षत्री वर्ण .... वर्णो मे भी जन्म दिखाए जाते है। अब तुम समझते हो हम2। जन्मो लिए चैन पोवेगे। बाबा हमको वो रास्ता बता रहे है। हम अभी पतित है इसलिए बैचैन है। दुखी है। जहां चैन हो उसको सुख शान्ति कहेगे। तो अब तुम बच्चो की बुधि मे आदमध्य अन्त का ज्ञान आया हुआ है। समझते हो बरोबर सतयुग मे भारत कितना सुखी था। चैन मे था। दुख अथवा बैचैनी का नाम नही था। अब तुम पुरुषार्थ कर रहे हो स्वर्ग मे जाने लिए। अब तुम बने हो ईश्वर सम्प्रदाए के। और वो है आसुरी सम्प्रदाए के। तुम जानते हो हम परम पिता परमात्मा के बने है। कोईभी देह धारी को भगवान नही कहा जाता। आत्मा को भी भगवान नही कहा जाता। कहते है ना पापात्मा। आत्माए अनेक है। परमात्मा एक है। सब ब्रदर्स है। सभी परमात्मा बाप हो ना सके। इतनी थोड़ी सी बात मे भी मनुष्यो की बुधिमे नही आती। बिलकुल ही पथ्थर बुधि है बाप आए बन्दर बुधि को मन्दिर लायक बनाते है। पाचं विकार हरेक मे है नां। इसलिए बन्दर मिसलकहा जाता है। राम ने यह सेना ली है। तुम शिव शक्ती सेना हो नां। रावण पर विज्य पाते हो। [illegible]

दुनिंया पर है। बाबा ने समझाया है सारी दुनिंया बड़ा बेहद का बेट है। वो छोटे2 बेट होते है। बाप समझाते है अब सारी धरती पर रावण राज्य है। इन बातो को मनुष्य नही समझते। वो तो सिर्फ शास्त्रोकी बाते धारण कर कहानी सुनाते रहते है। कहानी को ज्ञान नही कहा जाता। शास्त्रो मे सब है जूठी कहानीयां। उनसे मनुष्य सदगति को पा नही सकते। ज्ञान से सदगति मिलती है। ज्ञान देने वाला एक है दूसरा ना कोई। भक्तो के भगवान ही आकर रक्षा करते है। इस समय सब पतित भक्त है। सदगति देने वाला है एक बाप। पतित पावन सर्व के सदगति दाता उनको कहते है। साधु लोग ना खुद सदगति को पा सकते है ना किस को सदगति दे सकते है। साधु समझते है गगां पतित पावनी है। पुकारते फिर भी उनको है हे पतित पावन। यह अभी तुम बच्चो की बुधि मे आया है कि जूठ बोलते है। यह अपनको गुरु भी कह नही सकते। गुरु अर्थात जो सदगति देवे। सदगति दाता तो हैही एक। इन्हो को कहा जाता है गुरु। शिव बाबा तो वर्सा देते है नां बाप भी है सिक्षक भी है। सोनार भी है वकील बैरेस्टर भी है। क्योकि जमघटो की सजा से छुडाने वाला है सतयुग मे कोई भी जेल मे नही जावेगे। सब को जेल मे जाने से छुडाते है। बच्चो की सर्व श्रेष्ट शुभ कामनाए पूरन होती है। रावण दुवारा अशुध कामनाए पूरी होती। शुध कामना पूरी होने से तुम सदां सुखी बन जाते हो। अशुध कामना है पतित विकारी बनना। पावन रहने वाले को ब्रह्मचारी कहा जाता है। तुमको अभी पवित्र रहना है। पवित्र बन और पवित्र दुनिंया का मालिक बनना है। पतित से पावन एक बाप ही बनाते है। साधु सन्त आद तो खुद भी पतित है भ्रष्टाचार से पैदा होते है। देवतायो के लिए ऐसे थोड़ई कहेगे। वहां विकार होते ही नही। वो है ही पावन दुनिंया। लक्ष्मी नारायण सम्पूर्ण निरविकारी थे। भारत पवित्र था। यह अभी तुम समझते हो सतयुग मे प्युरटी थी तो पीस प्रास्पर्टी थी। सब सुखी थे। रावण राज्य जब से शुरु हुआ है तब से गिरते है। अभी तो कोई काम के नही रहे है। एकदम कौडी मिसल बन पड़े है। अब फिर हीरे मिसल बाप दुवारा बनते है। भारत जब सतयुग था तो हीरे जैसा था। अब तो कौडी मिसल भी नही है। इनसालवन्ट इरलीजस है। अपने धर्म का ही किस को पता पड़ता है। पाप करते रहते। वहां तो पाप का नाम नही। तुम देवी देवता धर्म के नामी ग्रामी हो। देवी देवतायो के ढेर चित्र है। और धर्मो मे देखेगे एक ही चित्र। क्रिश्चयनस पास एक ही कराईस्ट का चित्र होगा बौधियो पास एकही बौध का। क्रिश्चयनस कराईस्ट को ही याद करते है। उनको नन कहा जाता है। ननस माना, और कोई भी नही सिवाए एक कराईस्ट के। इस लिए कहते है नन बट कराईस्ट। ब्रह्मचारी रहती है। तुम भी ननस हो। तुम अपने गृहस्थ व्यवहार मे रहते नन्स बनती हो? एक ही बापको याद करती हो। नन बट बन। एक शिव बाबा दूसरा ना कोई। उन्हो की बुधि मे फिर भी दो आ जाते है। कराईस्ट के लिए भी समझेगे वो गाड का बच्चा था। परन्तु उनको गाड की नालेज नही है। तुमको नालेज है। सारी दुनिंया मे ऐसा कोई नही जिसको परमात्मा की नालेज हो। परमात्मा कहां रहते है कब आते है कुछ नही जानते। उनका क्या पार्टचलता है यह कोई नही जानते। भगवान को जानी जाननहार कहते है। समझते है वो हमारे दिल की बात को जानते है बाप कहते है मै नही जानता। हमको क्या पड़ी है जो हरेक की दिल को बैठ रीड करूगा। हम आए ही है पतितो को पावन बनाने। अगर कोई पवित्र ना रहते है जूठ मूठ बोलते है तो नुकसान अपनको पहुचावेगा। गाया हुआ है देवतायो की सभा मे असुर आकर बैठते थे। वा अमृत बांटा जाता=ळ था। वा कोई विकार मे जाए छिप कर आए बैठते थे तो असुर हुए नां। आपेही अपना पद भ्रष्ट कर देगे। चंडाल का जन्म पावेगे। हरेक को अपना पुरुषार्थ करना है। नही तो अपनी ही सत्यानश करते है बहुत ऐसे है जो छिप कर आए बैठते है। कहते हम विकार मे [illegible] थोड़ई जाते। परन्तु [illegible] है। यह गोया अपनको ठगते है। अपनी सत्यानाश करते है। परम पिता [illegible] परमात्मा जिस[illegible] धर्मराज है उनके आगे जूठ बोलते है तो खुद ही डन्ट के भागी बनपड़ते है। बहुत [illegible] भी [illegible] है। बाबा जब पहली [illegible] गया था तो [illegible]